The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

महापाषाण संस्कृति और मुण्डा जनजाति में मृत्यु संस्कर परंपरा: खुँटी जिला के जोबे गाँव के सदर्भ में

Sushila Bage

Research Scholar, Department Of Anthropology, Ranchi University Ranchi

Email Id-Bagesushila0@Gmail.Com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20699549

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-05-2026

Published: 10-06-2026

Keywords:

महापाषाण संस्कृति, मुण्डा जनजाति, मृत्यु संस्कार, सांस्कृतिक निरंतरता, ससनदिरि, पहान-पुजारी ।

ABSTRACT

महापाषाण संस्कृति भारत की एक पुरानी परंपरा है । महापाषाण का अर्थ बड़ा पत्थर होता है, जिसका संबंध मृत्यु संस्कार से जुड़ी हुई है । आज भी झारखण्ड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ क्षेत्र में निवास करने वाली मुण्डा जनजाति में देखने को मिलता है । मुण्डा जनजातीय समाज में किसी व्यक्ति का मृत्यु हो जाता है तो, उसके नाम से ससनदिरि पत्थर गढ़ने की परंपरा दो या तीन साल के अंदर गढ़ा जाता है, लेकिन अभी लोगों के पास समय का सभाव को देखते हुए एक महीना या छः महीना में ही मृतक के नाम से ससनदिरि स्थापित कर दिया जाता है । झारखण्ड राज्य के विभिन्न जगहों में आज भी यह परंपरा जीवित है, जैसे-राँची जिले के सोनाहातु प्रखण्ड के अंतर्गत चोकाहातु में बहुत बड़ा जगह, लगभग सात एकड़ जमीन पर महापाषाण संस्कृति या ससनदिरि स्थापित किया गया है । इसी तरह खूंटी जिला के मुरहू प्रखण्ड अतंर्गत के जोबे गांव में महापाषाण संस्कृति देखने को मिलता है । मुण्डा जनजाति में महापाषाण संस्कृति को अपनी पहचान मानते है, जहाँ-जहाँ मुण्डा लोगो का गांव है, उसके बगल में एक ससनदिरि स्थल बनाया गया है जिससे मुण्डाओं की पहचान होती है । मुण्डा समाज में पत्थर का महत्व केवल निर्माण सामग्री तक सीमित नही है, पत्थर स्मृति अस्तित्व और पूर्वजों की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है । मृत्यु के पश्चात् मृतक की स्मृति में पत्थर स्थापित करने की परंपरा, यह दर्शाती है कि मुण्डा समाज मृत्यु को जीवन का अंत नही बल्कि एक निरंतर प्रक्रिया मानता है

। पूर्वजों की आत्मा को जीवित परिवार और समुदाय का संरक्षक समझा जाता है । अन्य जनजातियों में भी यह परंपरा है, लेकिन मुख्य रूप से मुण्डा जनजातियों की परंपरा मानी जाती है । मुण्डा जनजाति में महापाषाण संस्कृति को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है । जिस घर में ससनदिरि स्थापित करने का प्रोग्राम रहता है उस परिवार के सारे रिस्तेदार को बुलाया जाता है साथ ही पूरा गांव वाले शामिल होते है । इस तरह सभी मिलकर ससन (पत्थर) को पानी से धोते है और हल्दी तेल से शुद्ध पवित्र करते है तथा कब्र के ऊपर पत्थर से ढक देते हैं, फिर एक पत्थर मृतक के सिर के दिशा में ऊपर की ओर गाढ़ दिया जाता है, और कफन कपड़ा से ढक दिया जाता है, फिर वहां पर उपास्थित सभी लोग बारी-बारी से तीन बार जोहार करते है, इस प्रकार महापाषाण संस्कृति या ससनदिरि संस्कृति का विधि विद्यान समाप्त होता है ।

परिचय

मुण्डा जनाजाति भारत के बहुत सारे राज्यों में फैले है, इसी तरह मुण्डा जनजाति झारखण्ड राज्य की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है । इस जनजाति का अध्ययन सबसे पहले भारतीय मानवशास्त्री "भरत चन्द्र रॉय" ने की थी । मुण्डा जनजाति समाज में मानव सभ्यता का सामाजिक, धार्मिक और संस्कृति एक महत्वपूर्ण परंपरा से जुड़ी हुई है । खुँटी जिला के जोंबे गाँव में यह परंपरा मुण्डा जनजाति में एक परिवार का एक पीढ़ी से चौथी पीढ़ी तक के लिए घर आगंन में एक ससनदिरि स्थापित करते है, जिसमें एक परिवार के जितने भी लोगो की मृत्यु हुई है, उन सबका नाम वंशावली के आधार पर अंकित किया जाता है और सभी त्योहार में उस पत्थर के पास पूजा करके अपने पूर्वजों को याद करते है । मुण्डा जनजाति में जब किसी का मृत्यु हो जाती है, तब एक ससन (मसडा) स्थल में गढ़ दिया जाता है, फिर कुछ दिनों के बाद कब्र के ऊपर पत्थर के ढक दिया जाता है, ऐसा खुँटी जिले के जोबे गांव में देखने को मिला है । खुँटी जिला में बहुत सारा ऐसा गाँव है, जहाँ कब्र अलग जगह होती है और ससनदिरि स्थल अलग से बनाया जाता है, इस गाँव के मुण्डा जनजाति में ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कुछ मुण्डाओं में अभी भी शव को जलाने की प्रथा है । मृतक के शरीर को नदी किनारे समसान घाट पर जलाकर उसका राख या कुछ अस्थि को मिट्टी के बर्तन में लाकर उसके नाम से ससनदिरि स्थापित करते है । मुण्डा समाज के लोगों का कहना है कि ससनदिरि के माध्यम से मृतक की आत्मा को सुरक्षित रखा जाता है । मुण्डा समाज का जीवन सामुहिकता पर आधारित है । गाँव की व्यवस्था ग्राम सभा द्वारा संचालित होती है । जहाँ सभी महत्वपूर्ण निर्णय मिलकर लिये जाते है । समाज में पारंपरिक, मुखिया को "मुण्डा " कहा जाता है, जो सामाजिक और धार्मिक कार्यों का नेतृत्व करता है, इसके साथ ही मानकी और पाहन जैसे पद भी सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है । धार्मिक दृष्टि से मुण्डा समाज

प्रकृति पूजक है, ये लोग सूर्य, चंद्रमा, जंगल, पहाड़ और पूर्वजों की पूजा करते है । जहाँ पूर्वजों की आत्मा का वास माना जाता है । पर्व-त्योहार अनुष्ठान और सामूहिक भोज, समाज में एकता और भाईचारे को बढ़ावा देता है । मुण्डा समाज की संस्कृति में नृत्य, गीत, लोककथाऐ और पारंपरिक वेशभूषा का विशेष स्थान है । सरहुल, करम और सोहराई जैसे पर्व उनके सांस्कृतिक जीवन को दर्शाते है । आज के आधुनिक समय में शिक्षा, शहरीकरण और बहरी प्रभावों के कारण मुण्डा समाज में परिवर्तन आ रहा है । लेकिन इसके बावजूद यह समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को आज भी सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहा है ।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

. महापाषाण संस्कृति को जानना और मृत्यु संस्कार से जुड़ी परंपराओं को समझना ।

. मुण्डा जनजातियों की मृत्यु परंपराओं एवं उनकी धार्मिक अस्था व अनुष्ठानों को जनना ।

. सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाते हुए आधुनिक काल में भी मुण्डा लोगों का पुराने परंपरा से कैसे जुड़े है उसके बारे में जनना ।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

. शरद चन्द्र रॉय (1912)- इसकी पुस्तक “मुण्डा एण्ड देयर कंट्री” में मुण्डा जनजाति को ऐतिहासिक रूप से वर्णन किया गया है ।

. गया पाण्डेय् (2007)- इनकी पुस्तक “भारतीय जनजाति संस्कृति” इस पुस्तक में जनजातियों कि ससनदिरि के बारे में वर्णन किया गया है ।

. वी0डी0 कृष्णस्वामी(1944)- इस पुस्तक मे महापाषाणिक समाधियों का सुचारू रूप से अध्ययन किया तथा पहली बार इन समाधियों की ओर पुरातत्ववेत्रों का ध्यान आकर्षित किया गया ।

. डॉ0 राम कुमार तिवारी (2004)- अपनी पुसक " झारखण्ड की रूपरेखा " में मुण्डा जनजाति का परिचय दिया गया है । मुण्डा जनजाति के गाँव के ठीक किनारे शमशान होता है, इसे ससन भी कहते है ।

. विनाय कन्डुलना (2016)- इनकी पुस्तक ससनदिरि और कमन की धर्म-विधि में स्थानीय रीति रीवाजों के अनुसार मुण्डाओं का ससन औक कमन का संक्षिप्त वर्णन किया गया है ।

. सर मार्टीमर व्हीलर (1947)- यह पुस्तक बहागिरी स्थान के उत्खनन के आधार पर दक्षिण भारत की महापाषाणिक संस्कृति को मजबूत आधार प्रदान किया है ।

. जगदीश त्रिगुणायत (1968)- इनकी पुस्तक कुर्सीनामा में मुण्डाओं का नृजातिय इतिहास के बारे में विस्तार से अध्ययन किया गया है ।

. डॉ0 विमला चरण शर्मा (2006)-अपनी पुस्तक "झारखण्ड की जनजातियाँ" इस पुस्तक में मुण्डा जनजातियों का वर्णन किया गया है ।

वर्तमान अध्ययन की पद्धति

इस लेख में उपयोग किया गया डेटा गहन साक्षात्कार केस स्टडी के माध्यम से डाटा एकत्र किया गया है और कुछ द्वितीयक स्रोतों से जैसे-पुस्तकों पत्रिकाओं और इंटरनेट संसाधनों से भी एकत्र किया गया है ।

मुण्डा जनजाति में मृत्यु संस्कार

मनुष्य का जीवन जन्म के रूप में इस दुनिया में आता है और उसका मृत्यु एक न एक दिन तय रहता है, एक मनुष्य का जन्म कब होगा इसका पता मां के गर्भ में आने के बाद पता चल जाता है, लेकिन उसका मृत्यु कब होगा ये पता किसी को नहीं रहता है । बच्चा, बुढा सभी का मृत्यु कभी भी हो सकता है । इसी प्रकार मुण्डा आदिवासी समाज में मृत्यु संस्कार अपने जीवन का अहम हिस्सा माना जाता है । प्राचीन काल से मुण्डाओं में भी जलाने की प्रथा पाई जाती थी, लेकिन धीरे-धीरे अब मुण्डा समाज के रीति-रिवाज में बदलाव आने लगा है और अब सभी मुण्डा समाज के गाँवों में दफनाने की परंपरा पाई जाती है । मुन्डा लोग अपना स्थाई जीवन बसाने के लिए जंगल, पहाड़ को काट कर अपना जगह, जमीन बनाकर स्थाई रूप से रहने लगे, तब से खुद के जमीन में दफनाने शुरु किए । जोबे गाँव में किसी ब्यक्ति का मृत्यु हो जाता है तो, पूरे गाँव के लोग शोक मनाते है । इस गाँव में मृत्यु संस्कार में दफनाने की परंपरा है, गांव के किनारे ही क्रब स्थल है । इसी क्रब स्थल में गांव के सभी लोग दफनाते है, और किसी का मृत्यु अकाष्मिक दुर्घटना के द्वारा होती है तो उसको कब्र स्थल के किनारे या कब्र के कोना में दफनाया जाता है ।

जैसे कि सड़क दुर्घटना, तालाब या कुआँ, में डुबने के कारण या फांसी होकर आत्माहत्या कर मरे हुए ब्यक्ति को कब्र के किनारे जगह दिया जाता है, ऐसा इसलिए किया जाता है कि लोगो का मानना है कि अचानक मृत्यु हो जाने से वह भूत (बोंगा) बन जाता है और उसका आत्मा भटकते रहता है । जोबे गांव में छोटे बच्चों का कब्र अलग है, छोटे-छोटे दुध पीता बच्चा का मृत्यु हो जाता है उसको बरगद पेड़ और कोरेया पेड़ के नीचे दफनाया जाता है । बरगद और

कोरेया पेड़ के नीचे दफनाने का कारण यह होता है कि इस पेड़ का गध दुध के समान सफेद निकलता है, इसलिए जब एक दुध पीता बच्चा का मृत्यु हो जाता है, तो पेड़ के नीचे या पेड के छाया में दफनाने से पेड के जड के माध्यम से मां का दुध बच्चा को मिलता है, ऐसा इस गांव के मुण्डा जनजातियों का मानना है । मुण्डा समाज में जिसका कान छेदी (टुकूइ लुतूर) जब तक नही होता है, तब तक समाज का सदस्य नही कहलाता है, इसी दौरान किसी कारणवस उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसको कब्र में नही दफनाया जाता है । कान छेदी के बाद ही समाज में सदस्य के रूप ग्रहण करता है और समूहिक कब्र स्थल में जहग दिया जाता है । मुण्डा जनजातीय समाज में गाँव का मृत्यु संस्कार में सभी महिला पुरूष बच्चे सामिल होते है ।

मृत्यु की सुचना देना

मुण्डा जनजातीय समाज में परिवार के किसी सदस्य का मृत्यु हो जाता है, तो परिवार के सभी सदस्य रोते विलापते है । ये सुनकर अगल-बगल के पड़ोसियों को पता चल जाता है, और गाँव के सभी लोग मृतक के घर पहुंच जाते है । मृतक के परिवार वालों से पुछते है, क्या हुआ, कैसे हुआ, फिर परिवार के सभी सदस्य को संभालते है । गांव के सभी पुरुष एक जगह जमा होकर बात-विचार करते है और एक या दो लोग अगल-बगल के गाँव में जाकर सूचना देते हैं कि फलना के घर में ठीक नहीं हुआ । हम लोग आपलोग को शोक समाचार देने आए है, बोल कर सूचना देते है, कुछ लोग मृत व्यक्ति के लिए कफन कपडा, अगरबत्ती, मोमबत्ती,कॉफिन बॉक्स इत्यादि खरीदने के लिए शहर चले जाते है, कुछ लोग गढा खोदने के तैयारी में लग जाते है । आज कल तो डिजिटल युग के माध्यम से दूर-दराज के मेहमानों के पास भी मोबाइल के द्वारा फोन कर सूचना दे दिया जाता है । जब से फोन का सुविधा हुआ है, तब से सुख-दुख का सूचना तुरंत मिल जाता है, जिसके कारण दूर में रहने वाले भी आ पाते हैं । पहले जमाने में फोन का सुविधा नहीं होने के कारण दूर के मेहमानों को गाँव के किसी ब्यक्ति के मृत्यू का सूचना मिलने में महीना या साल लग जाता था । जोबे गाँव में जब किसी परिवार में किसी ब्यक्ति का मृत्यु हो जाता है, तो महिला-पुरुष एक जगह जमा होकर मृत ब्यक्ति को तुरंत कपडा पहनाया जाता है, पुरुष का मृत्यु होने पर पुरूष लोग और महिला की मृत्यु होने पर गांव की सभी महिलाएं मृत महिला को कपडा पहनाते है और उसका बाल भी बना देते है । अगर मृत महिला का पति जिंदा है तो शादी के समय लगाया गया सिंदूर उपलब्ध है तो उसी सिंदूर को मृत पत्नी के मांग में लगाता है, यदि उस समय का सिंदूर उपलब्ध नही है तो घर में उपलब्ध सिंदूर को ही अपनी पत्नी के मांग में लगाता है । जोबे गाँव में इस तरह का नियम देखने को मिलता है । बहुत सारे ऐसे गांव है जहाँ मुण्डा समाज का नियम कानून अलग-अलग होता है, जैसे बुडू प्रखण्ड के चोकाहातु गाँव के मुण्डा जनजाति में एक अलग प्रथा देखने को मुझे मिला कि इस गांव में जब किसी लड़की को शादी करके लाते है, तो उसका पति एक लोहे का कडा (चुडी) अपनी पत्नी को पहनाता है । जब पत्नी की मृत्यु हो जाता है तो उसका पति उस लोहे का कडा (चुडी) को उतारता है, उसके पति के अलाव और कोई भी उस लोहे का कडा (चुडी) को उतार नही सकता है । इस प्रकार मुण्डा समाज में रीति-रिवाज देखने, सुनने को मिलता है ।

मुण्डा समाज में शोक के समय कुछ नियमों का पालन करते है

. मृतक का दफन कार्य जब तक नहीं होता तब तक बालों को कंघी नहीं करते है ।

. तेल साबुन का इस्तेमाल नौ दिन तक नहीं करते है ।

. एक साल तक तेल में रोटी छान कर नहीं खाते है ।

. किसी प्रकार का त्योहार गाँव में होता है तो उसमें भाग नहीं लेते है ।

. मृतक का कमन जब तक नहीं होता तब तक सदा खाना खाते है।

. किसी प्रकार का त्योहार गाँव में मनाते है तो उसमें मृतक के बार घर वाले भाग नहीं लेते है ।

. घर में किसी तरह का शुभ काम एक साल तक वर्षित रहता ।

दफन संस्कार

मुण्डा जनजातीय समाज में दफन संस्कार परंपरा देखने को मिलता है । इसी तरह खुँटी जिला के जोबे गांव में एक किनारे कब्र या (मसड़ा) स्थल बनाया गया है । दफनाने के लिए मृतक के लंबाई के अनुसार पांच या छः फीट का गढ़ा खोदा जाता है । गढ़ा खोदने से पहले एक लम्बा पतला सा बांस का डंडा से मृत ब्यक्ति के शरीर को नापा जाता है फिर मृत व्यक्ति के शरीर के नाप अनुसार उस डन्डा से कब्र के जमीन को नापा जाता है, कितना लम्बा, कितना चौडा गढ़ा खोदना है, उसके हिसाब से गढ़ा तैयार किया जाता है । मृतक के जितने भी रिश्तेदार आते है, वे सभी लोग मृत व्यक्ति को बाएं हाथ से तीन बार पानी पिलाते है । आज तुम्हारा अंतिम विदाई के नाम से पानी पिला रहे है, जिंदा थे उस समय तो नहीं पिला पाये, इसलिए पी लो बोलते हुए पिलाते है, जैसे भी गांव वाले और मेहमान सभी लोग जमा हो जाते है, उसके बाद मृत व्यक्ति के शरीर को दफनाने के लिए निकालते है, वैसे ही मृत ब्यक्ति का शरीर को जहाँ सुलाएं थे वहाँ से उठाते है, और वहाँ पर घर की महिलाएं उस जगह पर सूप से राख छिड़का देती है । फिर सभी लोग घर से निकाल जाते है और मृत व्यक्ति के शरीर को चार लोग कंधा में ढोकर ले जाते है । कब्र स्थल से जाते समय मृत ब्यक्ति का परिवार का एक सदस्य मृतक के सिर को छाता से छाया करते हुए साथ चलता है, ताकि मृत ब्यक्ति को धूप न लगे । हम लोग तुमको छाया करते हुए ले जा रहे है ऐसे बोलते हुए जाते हैं । कब्र जाते समय रास्ते में धान, चावल, उरद उस मृत ब्यक्ति के नाम से गिराते जाते है । मुण्डा समाज में मृत शरीर को दफनाने के लिए ले जाते समय रास्ते में मृत शरीर को तीन जगह रखा जाता है, उसके बाद ही कब्र जगह पहुँचता है । कब्र जगह पहुंच कर कब्र के लिए खोदा गया गढा के किनारे चारो ओर मृत शव को तीन बार घुमाया जाता है फिर जमीन में रखकर अंतिम विदाई के रूप में मृतक के घर वाले मृत ब्यक्ति को दतुवन करते है और उसके मुँह को पानी से धोते है तथा

वहाँ पर उपस्थित सभी लोग बारी-बारी से तीन बार उसको खाना पानी बाएँ हाथ से खिलाते है, और घर का एक सदस्य घडा में पानी भर कर कंधा में ढोकर लाता है उसे हंसुआ से छेद करके तीन बार कब्र के चारो ओर घुमता है फिर एक डण्डा में कफन कपडा को लपेट कर आग जलाता है और जलते हुए आग को गढा में तीन बार घुमा कर निकलते है । मृतक के सिर की तरफ रखकर घर का एक सदस्य फूंक कर बुझा देता है फिर मृतक के शरीर को गढा में उतारते है । मृत शरीर को गढा में उकारकर मिट्टी देते हुए कहते है कि हे सिंडबोंगा आप ने इसको इस दुनियां में भेजा और आज फिर से आप बुला लिए, आज धरती माता में समा रहे है, ये कहते हुए, वहाँ पर उपास्थित सभी लोग हाथ से तीन बार मिट्टी कब्र में डालते है, फिर उसका सारा कपड़ा लाता को उसके कब्र में ही डाल दिया जाता हैं । फिर घर वापस आते समय, घर परिवार के सभी पुरुष तालाब नहाने जाते हैं, घर का जो ब्यक्ति आग को बुझाता है वो उसी दिन सिर का बाल और नाखून सब कटा लेता है क्योकिं उसी को नौ दिन तक सारा विधि-विधान करना रहता है । रोज दिन सुबह दातुन पानी देना पडता है । घर का शुद्धिकरण के लिए गोबर से लिपाई करने के बाद हडिया का रानु से छिडकाव किया जाता है । ऐसा परंपरा लगातार नौ दिन तक चलता है ।

(दफन संस्कार)

दफन संस्कार के कुछ नियम

. मिट्टी देने के बाद कब्र को बाँस से घेर दिया जाता है ।

. जब तक ससनदिरि नहीं गढ़ा जाता है तब तक उसका देखभाल किया जाता है ।

. गाँव के बाहर या गाँव के किनारे कब्र स्थल बनाया जाता है ।

. मृतक के शरीर को उत्तर दिशा में सिर और दक्षिण दिशा में पैर करके दफनाया जाता है ।

. मृतक को दफन करने के बाद कमन का विधि-विधान होता है ।

. रात में रोज खाना पहुंचाने जाते है, जब तक कमन विधि विद्यान समाप्त नहीं होता है ।

. मृतक के लिए सुबह में तालाब के पास दातुन-पानी देते है ।

छाया अंदर करना

मुण्डा जनजातीय समाज में मृत व्यक्ति का दफन कार्य होने के बाद लगातर नौवा दिन तक कार्यक्रम चलता है । घर परिवार का शुद्धिकरण के रूप में विभिन्न कार्यक्रम होते है उसी में से एक नियम है, छाया अंदर या मुण्डारी भाषा में (उम्बुल अदेर) बोला जाता है । खुँटी जिला के जोबे गाँव में छाया अंदर परंपरा का नियम नौ दिन में किया जाता है, लेकिन इस गाँव में जिसका घर परिवार का आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण जिस दिन मृतक को दफनाते हैं, उसी दिन छाया अंदर कर लेते है क्योंकि मुण्डा समाज में छाया अंदर का प्रोग्राम में बहुत पैसा खर्च होता है, जितने भी रिश्तेदार है सभी को बुलाया जाता है और खाना-पीना खिलाना पड़ता है, इसलिए नौ दिन तक प्रोग्राम करना सक्षम नही होते । यदि पर्व-त्योहार का नेग सामने पहुंचा हो ऐसे स्थिति में भी तत्काल ही छाया अंदर किया जाता है । मृत शरीर को दफनाने ले जाने के क्रम में तीन बार रास्ते में रखा जाता है और रास्ते में जहाँ पहली बार रखा गया था वहाँ पर छाया अंदर का पुजा-पाठ होता है । मृतक को दफनाने के समय उसके भाई या पिता, बेटा जो आग को फूंक कर बुझाता है, वही छाया अंदर का सारे रिति-रिवाज को करता है । रात में रोज खाना-पानी, खैनी, बीड़ी इत्यादि पहुंचाने जाना होता है और सुबह में लगातार नौ दिन तक तालाब में नहाने जाता है, उसी समय मृतक का नाम लेकर दातुन पानी देते है । मृतक को दफनाने के बाद नौवा दिन शाम में छाया अंदर प्रोग्राम की तैयारी करते है, जिस स्थान में रोज खाना-पानी दे रहे थे, उसी स्थान पर केन्दु पेड का लकडी और पुवाल से एक झोपडी बनाते है और वहाँ पर पाहन के द्वारा पूजा-पाठ किया जाता है । पूजा के समय एक केसरी रंग की मुर्गी को दाना खिलाया जाता है, जैसे ही मुर्गी दाना खाती है, वैसे ही मृतक की आत्मा वहाँ पर आ जाती है, उसके बाद उस झोपड़ी को आग लगा दिया जाता है । पहान मृत ब्यक्ति का नाम लेके तीन बार पुकारता है कि तेरा घर जल रहा है. जल्दी आओ और हमलोग के साथ चलो, हम सब तुम्हें लेने आए है, ऐसा कह कर घर वापस आते है । घर में पहले से दीया जलाकर रखा जाता है, वो दीया जिसके साथ मृतक की आत्मा आती है, वह ब्यक्ति घर में जैसे ही कदम रखता है वैसे ही जलता हुआ दीया बुझ जाता है, तभी सब समझ जाते है, कि उसकी आत्मा वापस हमलोग के साथ आ गया । जिस

ब्यक्ति के कदम रखने से दीया बुझ जाता है उस ब्यक्ति की खातिरदारी बहुत अच्छा से करते है और खुशी-खुशी मृत ब्यक्ति की आत्मा को अपने पूर्वजों के साथ घर के आदिड ओडा में जगह दिया जाता है ।

अंतिम भोज अनुष्ठान

मुण्डा समाज में मृत्यु परंपरा के अंतिम भोज अनुष्ठान नौ दिन में किया जाता है । मृतक के परिवार की ओर से सारे रिश्तेदारों को बुलाया जाता है । शोक अवधि समाप्त होने पर अंतिम भोज का आभोजन किया जाता है । यह भोज साधारण नहीं होता है बल्कि एक धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान माना जाता है । अंतिम भोज के दिन परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, पडोसी और गांव के सभी लोग एकात्रित होते है । सबसे पहले घर की सफाई कर गोबर से लिपाई की जाती है फिर हडिया रानु को घोल कर घर में छिडकाव करते हुए घर का शुद्धिकरण किया जाता है, उसके बाद पूर्वजों और मृत आत्माओं को याद किया जाता है । पाहन और परिवार के बुजूर्ग मिलकर पूजा करते है, पूजा समाग्री के रूप में आरवा चावल (इलि), हडिया, कसा लोटा में पानी और गोलईची फूल, मुर्गा, काला रंग का खस्सी (बकरा) की बलि दी जाती है । मुण्डा समाज के लोगों का कहना है कि इससे मृत आत्मा को संतुष्टि होती है । पूर्वजों के लोक में शांति प्राप्त होती है । भोज में चावल, दाल, मांस, और हडिया का विशेष महत्व होता है । अंतिम भोज में बनाई गई खाने-पीने की सामग्री को सबसे पहले मृत ब्यक्ति की आत्मा को अर्पित किया जाता है, फिर वहाँ पर उपस्थित लोगों को खिलाया जाता है । सामूहिक रूप से भोजन करना मुण्डा समाज की एकता और सामुदायिक भावना को दर्शाता है । इस अवसर पर लोग मृत व्यक्ति के अच्छे कार्यों एवं जीवन की बातों को याद करते है । परिवार के सदस्य बुजूर्गों से आशीर्वाद लेते हैं और समाज के लोग दुखी परिवार को सांत्वना देते है । अंतिम भोज के बाद शोक की अवधि समाप्त हो जाती है इस प्रकार जोबे गाँव के मुण्डा जनजाति में मृत्यु संस्कार का अंतिम भोज केवल भोजन का आभोजन ही नहीं बल्कि धार्मिक आस्था, सामाजिक एकता और पूर्वजों के सम्मान का महत्वपूर्ण प्रतीक है ।

मृत्यु संस्कार के अंतिम विधि ससनदिरि

मुण्डा जनजातीय समाज में मृत व्यक्ति के नाम से एक पत्थर गढ़ा जाता है, जो महापाषाण संस्कृति से संबंधित है । यह परंपरा पाषाण काल से चली आ रही है । मुण्डा जनजाति इस महापाषाण संस्कृति को ससनदिर के नाम से अभी तक जीवित रखे हुए है । गाँव में किसी ब्यक्ति की मृत्यु के बाद तीन चार साल में मृतक के नाम से पत्थर गढ़ा जाता है । सभी गांवों में अलग-अलग रीति- रिवाज देखने को मिलता है । अधिक्तर ग्रामीण क्षेत्र के गाँव में कब्र स्थल अलग जगह पर होती है और ससनदिरि पत्थर अलग से गढ़ा जाता है । तीन चार साल बाद कब्र से चुका में हड्डी चुनकर लाते है, उसे मुण्डारी में (जंग हलंग) कहा जाता है, उसे ससन स्थल लाया जाता है जब मृतक के नाम से ससनदिरि स्थापित किया जाता है, उस समय चुका का हड्डी को ससन पत्थर गढ़ता है उसी में गढ़ देते है । जिसे पत्थरगडी, ससनदिरि (जंगतोपा) इत्यादि नाम से बोला जाता है और जहाँ पर मृत शरीर को दफनाते है, उस स्थान को (मसडा)

कहा जाता है । झारखण्ड के खुँटी जिला अंतर्गत जोबे गाँव में ससन और मसड़ा एक ही में बनाया गया है । कब्र के ऊपर ही एक आयताकार पत्थर जिसे (डोलमेन) भी कहा जाता है, इस कब्र के ऊपर बिछा दिया जाता है । मृतक के सिर तरफ एक सिधा खड़ा पत्थर (मेनहिर) गाढ दिया जाता है, इसे मुण्डारी भाषा में (बोः दिरि) कहा जाता है, जिसमें मृतक के जन्म तरीक, मृत्यु तरीक, नाम, मौजा और सबसे ऊपर में सूर्य, चन्द्र, तारा, छाता इत्यादि चित्र अंकित रहता है । जोबे गाँव में पत्थर नहीं मिलने के कारण दूर से लाना पड़ता है । मुण्डा समाज में पत्थर को ढोकर लाने की परंपरा है, लेकिन नजदीक में नहीं मिलने की वजह से गाड़ी से लेकर आते है । पत्थर को अच्छी तरह से धोकर उस पत्थर में तेल हल्दी से शुद्ध पवित्र कर चावल आटा का घोल को पत्थर के ऊपर लगाया जाता है और फूल माला से सजा दिया जाता है, पहान के द्वारा पूजा-पाठ करने के बाद पत्थर के ऊपर काला रंग का बकरा (खस्सी) का खुन गिराया जाता है, फिर ससन पत्थर के ऊपर सफेद कपड़ा से लपेट दिया जाता है, पत्थर के पास अरवा चावल, सिन्दूर, अगरबत्ती, दुबला घांस, लुलाईची फूल और हडिया को अर्पित किया जाता है, फिर वहाँ उपास्थित सभी लोग तीन बार ससनदिरि पत्थर को जोहार करते है । इस प्रकार मुण्डा समाज में ससनदिरि केवल एक धार्मिक संस्कार नहीं है, बल्कि यह उनकी संस्कृति परंपरा और पूर्वजों के प्रति सम्मान का प्रतीक है । यह अनुष्ठान मुन्डा जनजाति की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

(महापाषाण संस्कृति ससनदिरि)

निष्कर्ष

महापाषाण संस्कृति और मुण्डा जनजाति की मृत्यु, परंपरा के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि प्रचीन काल से चली आ रही परंपरा आज भी मुंण्डा जनजाति के बीच जीवित है । मुण्डा समाज में में मृतकों की कब्र में विशाल पत्थर को स्थापित किया जाता है । मुण्डा लोगो में उनके धार्मिक विश्वास समाज में एकजुटता और पूर्वजो के याद में एक प्रतिक चिन्ह् को दर्शाता है । मुण्डा जनजातियों का ससनदिरि परंपरा एक मुण्डा समाज की पहचान को प्रस्तुत करती है । इस मृत्यु परंपरा के अवसर पर सामुहिक अनुष्ठान, सामुहिक भोज एंव मृतक के प्रति श्रद्धा प्रकट करते है । मुण्डा सामाज में सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता हमेशा बनी रहती है । इस परंपरा के माध्यम से यही प्रतीत होता है कि जनजातीय संस्कृति समय के साथ बदल गई है । लेकिन उसकी जड़े अभी तक मौजूद है जैसे कि महापाषाण संस्कृति या ससनदिरि संस्कृति मुण्डा समाज में अभी भी निहित है । मृत्यु संस्कार एक धार्मिक प्रक्रिया ही नहीं बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक रुप से एकता का प्रतीक को सिद्ध करता है । वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि महापाषाण संस्कृति और मुण्डा समाज की परंपराओं का संरक्षण, और संवर्धन किया जाए । शिक्षा प्रणाली, शोध संस्थानों और सरकारी नीतियों के माध्यम से इन परंपराओं को सम्मान और संरक्षण मिलना चाहिए, इससे न केवल मुण्डा समाज की सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहेगी, बल्कि भारतीय जनजातीय संस्कृति की समृद्धि भी बनी रहेगी । अतः यह कहा जा सकता है कि महापाषाण संस्कृति मुण्डा समाज के लिए केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है । मुण्डा समाज इस संस्कृति की जीवंत मिसाल प्रस्तुत करता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखा गया है । यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक आधार प्रदान करता है, और जनजातीय अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.प्रसाद लक्ष्मण (1986), "भारत की महापाषाणीय संस्कृति" पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ।

2. कन्डूबना जोसेफ (2016), "मुण्डाओं का ससनदिरि" खुँटी पब्लिकेशन, छोटानागपुर इड़िया ।

3. चौबे रमेश (2002), "पुरातात्विक मानव विज्ञान" भोपाल, मध्य प्रदेश ।

4. विमला चरण (2001), "झारखण्ड की जनजातियाँ" रावत पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली इड़िया ।

5. त्रिपाठी बी0 एन0 (1980), "भारतीय पुरातत्व का इतिहास" वाराणसी भारती भवन ।

6. तिग्गा फादर जस्टिन (1998), "मुण्डा समाज की संस्कृति और परंपराएं " राँचीः जनजातीय प्रकाशन ।

7. ओझा रामकृष्ण (2002), "आदिवासी जीवन और संस्कृति" भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।

8. मिश्रा के0 के0 (2010), "झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति" रांची झारखंड पीपुल्स पब्लिकेशन ।

9. शुक्ल हरिशंकर (1995), "भारतीय जनजातियाँ और संस्कृति" नई दिल्ली प्रकाशन विभाग ।